सचेत करने वाली कहानी

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

पिछले वर्षों में, श्रीगुरुमाई ने हमें उस प्रेम के बारे में सिखाया है जो एक माँ को अपने बच्चे से होता है, साथ ही उन उत्तरदायित्वों के बारे में भी, जो उस प्रेम के साथ जुड़े हैं। उन्होंने इस प्रेम से सम्बन्धित बहुत-सी कहानियाँ भी सुनाई हैं। एक ऐसी ही कहानी यहाँ दी जा रही है जो मैंने गुरुमाई जी से सत्संग में सुनी थी। मैंने मातृ-दिवस २०२१ के उपलक्ष्य में सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के लिए इसका पुनर्लेखन किया है।

गाँव के चौराहे पर हल्की-सी रौशनी थी, जैसी कि दिन ढलते समय होती है जब आकाश में सूरज ढलने लगता है। चारों ओर शान्ति छाई हुई थी—कहा जा सकता है कि यह शान्ति डरावनी थी, जैसे तूफ़ान के आने से पहले की शान्ति। धीरे-धीरे चलता हुआ वह आदमी सामने आया। उसके कन्धे झुके हुए थे जैसे शरीर के अन्दर धँसे हों। मोटी-मोटी ज़ंजीरों में जकड़े उसके पैर, एक बार में कुछ ही इंच आगे बढ़ पा रहे थे। हर क़दम के साथ उसके पैरों के इर्द-गिर्द धूल के बादल-से उठते दिखाई देते।

उसके हाथ भी बँधे थे और हथकड़ियों से जुड़ी ज़ंजीर को, उसके दाहिनी ओर खड़े एक हट्टे-कट्टे, चौड़े जबड़े वाले पहरेदार ने कसकर पकड़ रखा था। बाईं ओर एक और पहरेदार था और उसके पीछे तीसरा जो मुस्तैदी से डटा हुआ था, उसे कोहनी या लात मारने या धक्का देने के लिए, अगर उसने आगे बढ़ने में देरी की या एक ही जगह पर बहुत देर तक खड़ा रहा। उस आदमी की नज़रें नीचे कंकड़ों से भरी रेतीली ज़मीन पर जमी थीं। अब उसने नज़र उठाकर ऊपर देखा। भारी भीड़ जमा थी। आने वालों का ताँता लगा था और वे सब उसी को घूर रहे थे। उनमें से कुछ गरदन उचका-उचकाकर देख रहे थे ताकि उसे अच्छी तरह देख पाएँ। वह आदमी उनके सामने से गुज़रा—भावशून्य चेहरा, आँखों में उदासी, ज़िन्दगी से हारा हुआ, जैसे मरने से पहले ही मर चुका हो।

भीड़ में लोग फुसफुसाने लगे। किस्मत ने कैसा दिन दिखाया है! ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ, उलझे बालों व धूल-धूसरित चेहरे वाला यह आदमी क्या *वही* करिश्माई नौजवान है जिसने उनके साथ इतने वर्ष बिताए थे? वही आदमी जिसकी सब तारीफ़ किया करते और जिस पर सब मोहित रहा करते—वह आदमी जिसे उसके बचपन से ही सब पसन्द करते थे। वह कितना ख़ूबसूरत, कितना मनमोहक हुआ करता था; उसका आचरण कितना निर्मल था। और जब वह अपने चेहरे पर टेढ़ी-सी, शरारत भरी

मुस्कान लिए उनकी ओर देखता—वह भी तब, जब उन्हें इसकी सबसे कम उम्मीद होती—तो वे उसे जाने बिना, उसकी मदद किए बिना, उस पर विश्वास किए बिना न रह पाते।

आसमान में सूरज ढलता जा रहा था और वह आदमी अपने पाँव घसीटता हुआ आगे बढ़ रहा था। फाँसी का तख़्ता अब बहुत दूर नहीं था। वहाँ खड़े लोगों की आकृतियाँ एक-दूसरे में गड्ड-मड्ड होकर उसे धुँधली-सी नज़र आ रही थीं : छड़ी लिए वह आदमी, वह बच्चा जिसके दाँतों के बीच खाली जगह थी, स्लेटी रंग के घुँघराले बालों और कँपकँपाते होठों वाली वह महिला . . .

लोहे के आपस में टकराने की आवाज़ आई क्योंकि वह आदमी एकाएक रुक गया था। अपनी नजरों से बहुत दूर, उसे कहीं एक कमरा दिखाई दे रहा था जहाँ एक हल्की-सी रोशनी टिमटिमाती हुई जल रही थी। वह पहरेदारों की ओर मुड़ा जो उसकी ओर प्रश्नवाचक निगाहों से देख रहे थे।

“फाँसी पर चढ़ने से पहले मेरी एक आख़िरी इच्छा है!” वह आदमी अचानक ज़ोर-से बोला, फिर थोड़ा रुका और अधिक सावधानी से बोलने लगा। “इस भीड़ में कोई है जिससे मैं कुछ कहना चाहता हूँ। क्या आप मेरी यह विनती स्वीकार करने की कृपा करेंगे?”

पहरेदार एक-दूसरे की ओर देखने लगे। उन्होंने आपस में चुपचाप बात की और फिर मुड़कर अपने क़ैदी की ओर देखा और एक रूखी-सी हाँ में सिर हिला दिया।

“बड़ी मेहरबानी आपकी।”

वह आदमी भीड़ में घुस गया और पीछे-पीछे उसके पहरेदार, कसकर उसकी ज़ंजीर पकड़े हुए। नई ऊर्जा के साथ, तेज़ गति से वह आगे बढ़ता चला गया, जब तक कि वह उस स्लेटी बालों वाली महिला के बिलकुल सामने नहीं पहुँच गया जिससे अभी कुछ ही देर पहले उसकी नज़रें टकराई थीं।

नज़दीक पहुँचकर देखा तो वह महिला रो रही थी। उसकी आँखें नम थीं और चेहरे पर आँसुओं के धब्बे दिखाई दे रहे थे। उस महिला के सामने खड़े इस आदमी का सिर उससे कम-से-कम एक फुट ऊँचा था। वह कुछ कहना चाहती थी पर सिसकियों के अलावा उसकी मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकली।

वह आदमी उसकी तरफ़ बहुत धीरे-से, बहुत हौले-हौले झुका। उसके चेहरे ने महिला के चेहरे का लगभग स्पर्श ही कर लिया था; एक क्षण के लिए लगा जैसे कि वह उसके गाल को चूमने वाला है। पर फिर उस आदमी के चेहरे पर एक विद्रूप-सी मुस्कान आई, फिर उसने अपना मुँह खोलकर दाँत निकाले और —

कच्च!

वह महिला अपने कान पर हाथ रखकर चीख़ी और झटके से पीछे हटी; उसका चेहरा ख़ून-ख़ून हो गया था।

क्-क्-क्यों किया तुमने ऐसा?" उसने पूछा। उसका गला दर्द, घबराहट और अश्विवास से रुँध रहा था। "तुमने—तुमने मेरा कान काट लिया!"

उस आदमी ने उसके सामने ज़मीन पर थूक दिया।

फिर धमकी भरी आवाज़ में गुर्राकर बोला, "माँ।" उसका चेहरा घृणा से ऐंठ रहा था।

"माँ," आदमी ने दोबारा कहा, "मुझे बताओ कि आज मुझे मारने के लिए क्यों ले जाया जा रहा है?"

वह महिला—जो इस आदमी की माँ थी—बच्चों की तरह रो पड़ी; वह क्या कहे, उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था। उसने ख़ून से लथपथ अपना कान पकड़ा, आँखों में आँसुओं की बाढ़-सी आ गई थी और दाँत किटकिटा रहे थे।

"बोलो, मुझे ज़्यादा समय नहीं दिया जाएगा।" उस आदमी ने उसी सख़्त, रूखे स्वर में कहा।

"क्...क्योंकि," आख़िर उस महिला ने हकलाते हुए बोलना शुरू किया, "वे कह रहे हैं कि तुमने लोगों के यहाँ चोरी की! मेरे प्यारे बेटे, ये लोग कह रहे हैं कि तुमने लोगों का ख़ून किया! मुझे . . .मुझे विश्वास नहीं होता कि यह सच है, पर . . ." वह कहते-कहते रुक गई। उसके हाथों से ख़ून टपकता चला जा रहा था।

वह आदमी धीरे-से बोला, "तुम्हें विश्वास नहीं होता? तुम्हें? अगर ऐसी बात है माँ, तो मैं तुम्हें याद दिलाता हूँ। बीते दिनों की याद करो जब मैं कुछ ही साल का बच्चा था। तभी से तो इसकी शुरुआत हुई थी, है न? तभी से मुझे लोगों का सामान ग़ायब कर देने की आदत पड़ गई थी।"

"पर वह छोटी-छोटी चीज़ें थीं!" माँ बोल पड़ी। "खिलौने और छोटा-मोटा सामान। और तब तुम बहुत छोटे थे, छोटे-से बच्चे—और कितने प्यारे भी—और अगर तुम किसी के पास से कुछ ले भी लेते थे तो वे बुरा नहीं मानते थे।"

“और तब क्या हुआ जब मैं थोड़ा बड़ा हुआ और स्कूल गया? याद है, मैं कैसे अपने साथियों का सामान उठाकर लाने लगा था? याद है, यह मेरे लिए एक खेल बन गया था और मैं चोरी करता रहा, करता रहा?”

“हाँ, पर—”

“और तब तुमने क्या कहा था?” उस आदमी ने पूछा। “तुमने हँसकर कहा था कि मैं कितना चतुर हूँ। तुमने कहा था कि मैं तुम्हारा प्यारा-दुलारा, सबसे अच्छा बच्चा हूँ और इसे कोई बदल नहीं सकता।”

“तुम तो बस संसार को जानने की कोशिश कर रहे थे! तुम अपने आपको व्यक्त कर रहे थे!” उसकी माँ ने कहा। “और तुम तब भी बहुत छोटे थे।”

“और जब मैं थोड़ा और बड़ा हुआ, और मैं चोरी करने में सचमुच ख़ूब माहिर हो गया और मुझे इसमें और भी मज़ा आने लगा, तब? मैं किसी महिला के गले से हार उड़ा लिया करता था। किसी बिचारे बूढ़े ग़रीब आदमी की जेब काट लिया करता था। मैं धोखाधड़ी करके किसी के भी पैसे ग़ायब कर दिया करता था। और जब मुझे लगता कि वे मेरा पीछा करेंगे तो मुझे पता होता था कि क्या करना है। तब तुम मुझसे क्या कहा करती थीं?”

“मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम यह सब क्यों कर रहे हो।” उसकी माँ ने निराश होकर कहा। “पता नहीं तुम क्या सिद्ध करना चाहते हो। मैंने तुम्हें हमेशा यही बताया है कि मैं तुमसे कितना प्यार करती हूँ!”

“हाँ,” उस आदमी ने असन्तोष के साथ कहा। “ठीक कह रही हो। तुमने हमेशा मुझसे यही तो कहा। जब मैं बड़ा हो रहा था तो तुमने बस यही कहा मुझसे। *तुम बहुत अच्छे हो। तुम ख़ास हो। तुम महान हो। तुम अद्‌भुत हो। तुम चाहे जो भी करो, यह बात कभी नहीं बदलेगी। तुम मेरे अनमोल, दुलारे बच्चे हो। मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, बहुत प्यार करती हूँ, बहुत-बहुत प्यार करती हूँ।*”

गाँव के चौराहे पर उस आदमी की आवाज़ गूँज उठी। पास ही पेड़ पर बैठे कौए घबराकर कर्कश ध्वनि करते हुए डाल पर से उड़ गए।

“और जानती हो माँ?” वह आदमी फिर धीमे-से कहने लगा। “मैंने तुम्हारी बात पर विश्वास किया! मैं तुम्हारी हर एक बात पर विश्वास करता रहा! बताओ माँ कि मेरे कुछ भी करने पर जब तुम दिन-रात मुझसे यही कहती रहीं तो भला मुझे यह कैसे पता चलता कि सही क्या है और ग़लत क्या है?”

“तो अब रोओ मत माँ,” उस आदमी ने कहा। “यही सेज तुमने मेरे लिए सजाई है। मेरी यह नियति तुम्हारी ही गढ़ी हुई है। तुम्हारी तारीफ़ें तो मेरे लिए मौत ही बन गईं। तो तुम मेरी तारीफ़ ही करती रहो। कहती रहो मुझसे कि मैं जो कुछ भी करता हूँ वह कितना शानदार है। कहती रहो कि मैं कुछ ग़लत तो कर ही नहीं सकता। दिखाओ मुझे अपना वह प्यार जिसकी तुम बात करती हो।”

उपेक्षा भरी एक आख़िरी नज़र से अपनी माँ को देखने के बाद, वह आदमी फाँसी पर चढ़ गया। सूरज पूरी तरह पिघलकर क्षितिजरेखा पर फैल गया था, मानो रक्तिम लालिमा नारंगी आकाश में रिस रही थी। लोग उसकी हालत पर हँस रहे थे। भीड़ के उस समुद्र में कहीं से एक धीमी-सी सिसकी सुनाई दी।

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।